तेजस्वी क्रीं बीज मंत्र की सरल सहज साधना

वट वृक्ष की विशालता अपने आपमें अद्वितीय होती है। उसकी तुलना में उसके बीज बहुत ही छोटे होते हैं। लेकिन **उस वृक्ष से कम महत्व उसके बीज का नहीं होता है, अर्थात् बीज अपने आपमें पूर्ण क्षमता रखता है, आवश्यकता है उसे नियमित रूप से खाद-पानी देने की, देखभाल करने की। ठीक इसी प्रकार साधनाओं के क्षेत्र में बीज मंत्रों की साधना अपने आपमें पूर्ण सफल व शक्तिशाली होती है।**

क्रीं बीज अपने आपमें पूर्ण बीज है, मंत्र है जिससे पूर्णता तक को प्राप्त किया जा सकता है। क्रीं बीज अपने आप में संयुक्त बीज है, जिसका हम यदि संधि विच्छेद करें, तो उसके अंदर निहित शक्तियों के रहस्य को जाना जा सकता है। बीज मंत्रों की शक्ति अपने घटक मूल बीज अक्षरों की संयुक्त शक्ति से भी कई गुना अधिक तीव्र एवं तीक्ष्ण होती है। क्रीं बीज संयुक्त होकर पूर्ण बना है और पूर्ण बना है तो उसकी साधना और उसको हृदय में स्थापित करने से ही पूर्णता तक को प्राप्त किया जा सकता है, अन्य साधना की आवश्यकता ही न्यून हो जाती है।

क्रीं (=क+अ+र+ई+अं) का यदि ध्वन्यात्मक आधार पर उच्चारण के अनुरूप पूर्ण विच्छेद करें तो निम्न प्रकार से किया जा सकता है -

क्रीं = क+अ+र+अ+ई+अ+न्+ग+ह्, या

क्रीं = क+अ+र+अ+ई+अ+न+ग+ह

यदि हम किसी बीजाक्षर का निष्ग्रह सम्वेदनपूर्ण भाव से उस बीजाक्षर का बार-बार उच्चारण करें, तो उससे जो बोधत्व की स्पष्टता होती है वही उसकी मूल शक्ति होती है। उदाहरणार्थ **क्रीं बीज मंत्र के घटक अक्षरों का निम्न प्रकार से अपना अलग अलग महत्व है -**

क - यदि क. . .क. .. क... क... का उच्चारण करें, तो कुछ समय बाद में हमें 'क' के उच्चारण में किसी मूल भावभूमि की **अस्पष्टता** का बोध होने लगता है। साधना में इसकी प्रभावशीलता यह है कि जो कुछ साधक के अन्दर पाप, दोष आदि के व्यर्थ संग्रह हैं वे समाप्त होने लगते हैं। 'अ' की संगत पाकर पूर्ण रूप से अस्पष्टता विलीन हो जाती है। और जब विलीन होने की क्रिया होती है, तो वह क्रिया इस ब्रह्माण्ड में ही होती है, जिससे हमारी अंतश्चेतना का उदय होने लगता है। बाहरी चेतना स्थिर होने लगती है।

अ - यदि 'अ' शब्द को अ. . . अ... अ... अ... का उच्चारण करें, तो कुछ समय बाद किसी को मूल भावभूमि

की विस्तारिता का बोध होने लगता है। अर्थात साधना में इसका प्रभाव अपने स्वयं के विस्तारित होने से है। इसके प्रभाव से हमारी चेतना पूर्ण विस्तार के स्वरूप को प्राप्त कर पाती है। यही कारण है कि प्रत्येक व्यंजन में स्वर का प्रयोग अंशत: किया ही जाता है। मानवीय चेतना भी मूलत: एक व्यंजन है, जिसे स्वर के माध्यम से ही विस्तारित करना होता है।

र – यदि इस अक्षर का र. . . र. . . र... र... करते हुए बार बार उच्चारण करें, तो कुछ समय बाद हमें 'र' अक्षर में स्वयं के स्थापित होने का भेद होने लगता है। इससे मूल भावभूमि अपने पूर्ण स्थापित होने की क्रिया सम्पन्न होती है। चूंकि यदि स्थापित नहीं होगी, तो समयानुसार पुन: परिवर्तित हो जाएगी। 'र' अक्षर का बोध 'अ' अक्षर के सहयोग से स्थायित्व के विस्तार को प्राप्त कर लेता है। साधना में इसका प्रभाव यह है कि अंतश्चेतना की मूल भावभूमि ब्रह्माण्ड चेतना में स्थापित होकर स्थायित्व को विस्तारित करने में सफल हो जाती है। इससे व्यक्तित्व सदैव चेतना से आपूरित बना रहता है।

ई – यदि ई. . . ई... ई... का उच्चारण करें तो कुछ समय बाद हमें ई अक्षर में मूल भावभूमि के संबंध का बोध प्राप्त होने लगता है। अर्थात् चेतना की मूल भावभूमि अपने विराटता के संबंधों को प्राप्त करने में सफल होने लगती है। संबंधों की स्पष्टता तो स्वर से ही होती है।

न – यदि न... न... न... का उच्चारण करें, तो कुछ समय बाद विच्छेद की स्थिति के भावभूमि का बोध होने लगता है, अर्थात् जो कुछ अस्पष्ट व अज्ञात था वह अब स्पष्ट होकर ज्ञात हुए श्रृंखलाबद्ध होने लगा है। जिससे विराटता में निहित अंशों का भी बोध होने लगता है। साधना में इसका प्रभाव अंतश्चेतना में समायी विराटता के अंश का ज्ञान होने लगता है। अर्थात् ब्रह्माण्ड में अपने अस्तित्व का बोध होने लगता है।

ग – यदि ग... ग... ग...का उच्चारण करें तो कुछ समय उपरांत भावभूमि की लयबद्धता का बोध होने लगता है। अर्थात् जो कुछ विराटता और अंश और बाह्य की चेतना में चैतन्यता थी, उसमें लयबद्धता एकलयता अर्थात समायोजन की क्रिया सम्पन्न होने लगती है। साधना में इसका प्रभाव यह है, कि हम अंतस और बाह्य चैतन्यता को समायोजित करने में सफलता को प्राप्त कर लेते हैं, और उससे हमारे सौन्दर्य और सफलता में पूर्ण वृद्धि होती है।

ह – यदि ह... ह... ह... अक्षर का उच्चारण करें तो कुछ समय बाद भाव भूमि में उद्विग्नता का बोध होने लगता है, अर्थात् चेतना, जो अपना पूर्ण समायोजन अंतस और बाह्य में स्थापित कर चुकी है, उसमें क्रियाशीलता के क्रियात्मक पक्ष बनें, बनते रहें। इससे भावी अर्थात् भविष्य के क्रियात्मक कार्यों को नियोजित और संपादित क्रिया जा सके, जिससे चेतना ब्रह्माण्ड से तारतम्य बनाते हुए भूत, भविष्य, वर्तमान के एक वर्तुल में चलता रहे। साधना में इसका प्रभाव यह है, कि शिथिलता नहीं आती, और नित्य नई योजनाएं कार्य रूप लेती रहती हैं, जिससे चेतना के शून्य होने का अवसर नहीं रहता है।

उक्त व्याख्यान से पूर्णत: स्पष्ट होता है कि **'क्रीं'** बीज अपने आपमें पूर्ण चेतनायुक्त बीज है, जिसे प्राप्त कर जीवन को उस स्तर का बनाया जा सकता है, जो सामान्यतय: संभव नहीं है। बीजाक्षर जो सामान्य दिखाई दे रहा है, उसमें अद्भुत क्षमता समाहित है। गाड़ी कितनी ही बड़ी हो, लेकिन चाभी बहुत छोटी सी ही होती है। दुनिया कितनी ही बड़ी हो, लेकिन उसका दर्शन इन्हीं छोटी-छोटी दो आंखों से किया जाता है।

वैसे तो क्रीं बीज महाकाली का बीज मंत्र माना जाता है लेकिन काली के अवतरण से पहले ही जब सृष्टि की उत्पत्ति हो रही थी, क्रीं बीज का अवतरण तब ही हो गया था। अर्थात् स्पष्ट रूप में क्रीं बीज से ही महाकाली की उत्पत्ति हुई है। यह बात स्पष्ट है कि क्रीं बीज की साधना से बीजाक्षर में समाहित

महाकाली के समान क्षमता और तेजस्विता को गुरु के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। **क्रीं बीज पूर्णतः तत्वेष्टित बीज है, जिसके माध्यम से साधक तत्वदर्शी बनकर उस परम तत्व को भी प्राप्त कर सकता है। और तत्व का ही दूसरा रूप शक्ति है, इसीलिए इसे शक्तिबीज भी कहते हैं।**

गुरु गोरखनाथ बचपन से ही शक्ति साधक रहे हैं, उन्होंने अपने जीवन में क्रीं बीज की साधना को सम्पन्न किया और जीवन को क्रांतिकारी बना सके, उस परम तत्व को प्राप्त कर सके और जीवन में पूर्ण शिष्यत्व को धारण करते हुय भी युगपुरुष बन सके।

आज भी साधनाओं को उसी प्रकार सम्पन्न कर कोई भी उस उच्चता को प्राप्त कर सकता है। ब्रह्माण्ड की समस्त शक्ति ही इस मंत्र में, बीजाक्षर में समाहित है, जिसे धारण कर उन शक्तियों को प्राप्त किया जा सकता है।

जीवन का यह सौभाग्य होता है, कि व्यक्ति को कोई क्षमतावान सशक्त गुरु मिलता है, जो कृपा स्वरूप **क्रीं बीज की दीक्षा** प्रदान कर पूर्णता के साथ क्रीं बीज को हृदय में स्थापित कर दे। नियमित साधना रूपी खाद, पानी से वह बीज अवश्य ही एक दिन विराट वृक्ष बनेगा ही। जीवन में ऐसी क्रिया सम्पन्न हो यह जीवन का बहुत ही बड़ा सौभाग्य है, जीवन की सार्थकता इसीमें है। परंतु इसके लिए आपको स्वयं प्रयास करना होगा।

किसी का सौभाग्य किसी की चौखट पर दस्तक नहीं देता, उसे सप्रयास बलपूर्वक प्राप्त करना ही पड़ता है।

बाधाएं और समस्याएं तो जीवन में हैं ही, और रहेंगी भी, यह तो सदा का खेल है। यदि हम इन्हीं में उलझ कर रह गए, तो जीवन का सृजन कब करेंगे?

जीवन की सार्थकता को कब प्राप्त कर पाएंगे?

साधना विधि

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए न ही कोई समय अवधि या दिशा निर्धारित है और न ही कोई विशेष दिवस या मुहूर्त ही। फिर आने वाली तारीख 14.12.14 कालाष्टमी के विशेष दिन से भी यह साधना प्रारम्भ कर सकते हैं या किसी भी दिन अमृतकाल से इसे प्रारम्भ करें। साधक अपनी सुविधा एवं स्वेच्छानुसार कभी भी इस साधना को प्रारंभ कर सकता है। साधक श्रद्धा, विश्वास तथा पूर्ण सम्वेदनशीलता के साथ जप सम्पन्न करे। इस साधना में असफलता तो है ही नहीं, सफलता का मानदण्ड उसके अन्दर निहित चैतन्यता स्वयं ही बता देगी।

देखन में छोटन लगे, काज करें गंभीर

छोटा और बड़ा तो स्थूल रूप है, आकार है। और अध्यात्म में स्थूल को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया जाता, महत्व तो उसके सुक्ष्म पक्ष को ही दिया जाता है, उसमें निहित तत्व को ही दिया जाता है। मंत्र के छोटा या बड़ा होने से उसकी महत्ता, उसकी शक्ति कम या अधिक आंकी नहीं जा सकती है। उससे जीवन में क्या परिवर्तन आता है, उसमें क्या क्या संभावनाएं निहित हैं, वही उसकी शक्ति है। एक छोटे से हीरक खण्ड का मूल्य भी एक विशाल पर्वत खण्ड से अधिक हो सकता है। बीज मंत्रों का अपने आपमें इसीलिए इतना महत्व है। इन्हीं बीज मंत्रों को जोड़कर जहां दीर्घ मंत्रों का विधान है, वहीं ये लघु बीज मंत्र साधक के लिए 'मास्टर की' का काम करते हैं, ये मंत्र जपने में अत्यंत ही सरल होते हैं, जिन्हें कोई भी व्यक्ति बड़े ही आराम से बिना किसी उच्चारण दोष के सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर सकता है।

रात्रिकाल में एकान्त में स्वच्छ वस्त्र धारण कर शांतिपूर्ण वातावरण में किसी सुंदर पात्र में सामने **क्रीं यंत्र** को स्थापित करें। उसके ऊपर **क्रीं माला** को रख दें। यंत्र के सामने घी का दीपक जलाएं। यंत्र और माला के प्रभाव से जलता हुआ दीपक स्वयं क्रीं दीपक हो जाता है। इस क्रीं दीपक से क्रीं बीज की आभा और प्रकाश स्वयं स्पष्ट होने लगती है। मंत्र जप प्रारंभ करने से पूर्व यंत्र और माला पर कुंकुम, अक्षत अर्पित करें, फिर क्रीं माला से मंत्र जप प्रारंभ करें।

मंत्र

।।क्रीं।।

Kreeng

इस प्रकार नित्य या जब भी अवसर मिले मंत्र का जप जितना हो सके, करते रहना चाहिए, इसमें किसी प्रकार का कोई विशेष नियम आदि नहीं है।

साधना सामग्री पैकेट - 450/-